NCERT Solutions For Class 12 Hindi Aroh (Poem)

CH 5 – उषा

1. कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जाता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र हैं?

उत्तर: उषा कविता में कवि ने गाँव की सुबह का एक गतिशील शब्द – चित्र खींचा है जो अद्वितीय है। कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बदलने के लिए एक अद्भुत प्रयोग और प्रयास किया है। निम्न झांकी ग्रामीण जीवन की गतिशील झांकी को दर्शाता हैं:

इस गाँव का चौक राख से लीपा हुआ है,वहाँ सिल है और स्लेट की कालिमा पर चाक के रंग से मिले अदृश्य बच्चो के नन्हे हाथ है। कवि के अनुसार यह एक ऐसे दिन की शुरुआत है, जहां राग है, गीत है और भविष्य की आभा है।

2. भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौक

(अभी गीला पड़ा है)

नई कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नो और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपरोक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है? समझाइए।

उत्तर: कोष्ठक में लिखी गई पंक्ति " अभी गीला पड़ा है" ये ऐसा अर्थ दे रहा है कि चौक की राख से हुई लीपाई अभी – अभी समाप्त हुई है।यदि आप इस पंक्ति को भोर से जोड़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि सूरज उगने से पहले रात का रंग आसमान से बाहर आने लगा। इसलिए आसमान का रंग राख की तरह धूसर हो गया। जिसे ओस ने गीला कर दिया। यानी वातावरण में नमी भी मौजूद थी और इस समय मौसम सुहावना हो रहा था। कवि ने गाँव में भोर के समय चूल्हा जलाने वाली महिलाओं को सुंदर तस्वीर का वर्णन किया है और इसे "भोर " के साथ मिलन करते हुए इसका अद्भुत चित्रण किया है।

3. अपने परिवेश के उपमानो का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का शब्द चित्र खींचिए।

उत्तर: उषा कविता में कवि ने बताया है कि सुबह के समय सूर्य का उगना ऐसा लगता है जैसे यह आकाश और धरती के बीच की जगह को अपने सुनहरे रंग की रोशनी से भर देता है। उस समय सब अपने दिन की शुरुआत करते हैं। दिन धीरे- धीरे चलता है। जैसे सूर्यास्त के समय हम अपनी वेशभूषा बदलते हैं और सो जाते हैं। उसी तरह, सूरज भी हल्के लाल रंग की वेशभूषा पहनकर सोने के लिए तैयार हो जाता है। जिसे देखकर, हम सभी अपने दैनिक काम निपटा कर सोने की तैयारी में जुट जाते हैं। सूर्य उदय जीवन में एक

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

नई उमंग लाता है और नए कार्य की शुरुआत के लिए एक जोश प्रदान करता है वहीँ सूर्यास्त जीवन में अपने सारे काम समाप्त करके आराम करने की ओर अग्रसर करता है।

4. सूर्योदय का वर्णन लगभग सभी बड़ी कविताओं में किया है। प्रसाद की कविता ' बीती विभवरी जाग री ' और अज्ञेय की ' बावरा अहेरी ' की पंक्तियां आगे दी गई है। उषा कविता के समानांतर इन कविताओं को पढ़ते हुए नीचे दिए गए बिंदुओं पर तीन कविताओं का विश्लेषण कीजिए और यह भी बताइए कि आपको कौन-कौन सी कविता ज्यादा अच्छी लगी और क्यों?

***उपमान * शब्द चयन * परिवेश**

बीती विभावरी जाग री!

अंबर पनघट में डुबो रही,

तारा घट उषा नागरी।

खग- कुल कुल – कुल सा बोल रहा,

किसलय का अंचल डोल रहा,

लो यह लतिका भी भर लाई,

मधु मुकुल नवल रस गागरी,

अधरों में राग अमंद पिए,

आलको में मलमज बंद किए,

तू अब तक सोई है आली,

आंखों में भरे विहाग री।

(जयशंकर प्रसाद)

भोर का बावरा अहेरी,

पहले बिछाता है आलोक की,

लाल-लाल कनियां,

पर जब खींचता जाल को बांध लेता है

सभी को साथ,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

छोटी-छोटी चिड़िया, मंझोले परवे,

बड़े-बड़े पंखी,

डैनो वाले डील वाले डैन बैडौल,

उड़ने जहाज,

कलस – तिसूल वाले मंदिर शिवर से ले

तार घर की नाटी मोटी चिपटी गोल

धुस्सो वाली उपयोग सुंदरी,

बेपनाह कायाको:

गोधुलि की धूल को, मोटरों के धूल को,

पाक के किनारे पुष्पिताग्रह कणिकार की,

आलोचक-खची तन्वि रूप-रेखा को,

और दूर कचरा चलानेवाली कल की,

उंद्दड चिमनियों को, जो

धुआं यो उगेलती है मानो उस मात्र से,

अहेरी को हरा देगी।

(सच्चिदानंद हीरानंद 'अज्ञेय')

उत्तर: उपरोक्त दी गई गई कविताएं बहुत ही शानदार प्रतीत होती हैं। यह तीनों ही उत्कृष्ट है, जयशंकर प्रसाद जी की कविता नि:संदेह बहुत ही अच्छी है। इस कविता के उपमानो की बात करें तो प्रकृति का जितना सुंदर चित्रण प्रसाद जी ने किया है, वैसा अन्य कविताओं में देखने को नहीं मिला। हिंदी कविता में प्रकृति का मानवीकरण बहुत सुंदर रूप से किया गया है। प्रकृति का ऐसा सुंदर और अद्भुत चित्रण केवल इनकी कविताओं में ही पाया जाता है।

उपमान: अब इसी कविता में प्रसाद जी ने अंबर को पनघट के रूप में बताया है। इस कविता में प्रसाद जी ने पनघट को स्त्री और तारों को घड़े के समान बताया। ओस से भरी लता युवती है और पत्तों से भरी डालों को प्रसाद जी ने अंचल बताया है। प्रसाद जी कहते हैं की लता रुपी युविका फूलों रूपी गागर में पराग रूपी शहद भर लाई है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

इस तरह से उपमानो का प्रयोग करके प्रसाद जी ने कविता में प्राण डाल दिए हैं, ऐसा किसी अन्य कवि की कविताओं में नहीं पाया जाता।

शब्द-चयन: प्रसाद जी के शब्द चयन ने कविता में चार चांद लगा दिए हैं। जैसे-बीती विभावरी, तारा घट उषा नागरी,कुल-कुल, आदि शब्दों का प्रयोग कर प्रसाद जी ने कविता में गेयता का गुण डाल दिया।

परिवेश: तीनों कविताओं का विषय एक जैसा ही है लेकिन स्थिति और परिवेश अलग है। 'उषा' कविता में कवि ने गांव की भोर को चित्रित किया है। प्रसाद जी ने" बीती विभावरी" में पनघट, नदी और लता का चित्रण किया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in